डॉ० अनिरुद्ध प्रसाद
हिन्दी विभाग
महाराजा कॉलेज, आरा।

ध्रुवस्वामिनी

प्रश्न: 'ध्रुवस्वामिनी' नाटक के आधार पर रामगुप्त का चरित्र चित्रण कीजिए।

उत्तर: 'ध्रुवस्वामिनी' नाटक का खल पात्र रामगुप्त है। वह कपटधारी, प्रवंचक एवं दुष्ट प्रकृति का है। वह चन्द्रगुप्त की जगह खुद ही गुप्त कुल के सिंहासन पर जा बैठता है। वह अपने समय की सबसे सुंदरी ध्रुवस्वामिनी को अपने वश में कर लेता है। इस नाटक में उसका सारा कार्य-व्यापार विलासिता, धूर्तता एवं क्रूरता पर आधारित है। वह उच्च पद पर होते हुए भी सदैव शिखर-स्वामी जैसे धूर्त की चाटुकारिता में व्यस्त रहता है।

गुप्त कुल का सिंहासन रामगुप्त अवश्य प्राप्त करता है किंतु कुल की परंपरागत विशेषता उसमें एक भी नहीं। वह अपना अधिकांश समय सुरा-सुंदरियों एवं हिजड़े और बौनों के साथ बिताता है। वह एक पुरुषत्व विहीन और कायर व्यक्ति है। अन्तःपुर की ललनाओं में पड़ा हुआ, वह लुक-छिपकर लोगों की बातें सुनता है और राज्य में चिंताजनक स्थिति हो जाने पर वह प्रतिहारी को ही डाँट देता है — "मैंने तुमसे कह दिया न अभी मुझे अवकाश नहीं, ठहरकर आना।"

रामगुप्त एक पुरुषार्थ हीन व्यक्ति है। वह दिग्विजय के लिए तो निकलता है पर शकराज द्वारा चारों ओर से घिर जाने के बाद वह प्रतिकार की चेष्टा भी नहीं करता। वह शत्रु के अत्यन्त लज्जाजनक प्रस्ताव को भी ऐसे स्वीकार कर लेता है, मानो कुछ हुआ ही न हो। ध्रुवस्वामिनी के समर्पण को वह स्वीकार कर लेता है। शत्रु के शिविर में ध्रुवस्वामिनी और चंद्रगुप्त को चेष्टापूर्वक भेजकर वह अपनी बड़ी राजनीतिक विजय मानता है। उसकी राजनीति प्रपंच और प्रवंचनापूर्ण है। मंदाकिनी उसके हृदय को समझकर ठीक कहती है — "वीरता जब भागती है तब उसके पैरों से राजनीतिक छल-छंद की धूलि उड़ती है।"

चंद्रगुप्त और ध्रुवस्वामिनी के प्रति रामगुप्त का व्यवहार बड़ा निष्ठुर है। जिस भाई चंद्रगुप्त ने उसके लिए अपना राज-पद और वाग्दत्ता पत्नी की उपेक्षा कर दी, उसी की हत्या करवाने के लिए वह दिग्विजय का स्वाँग रचता है। अंत में वह शत्रु शिविर में बल-पूर्वक भेज दिया जाता है। शक शिविर में ध्रुवस्वामिनी के बातें सुनकर जब जाना अस्वीकार करता है तो रामगुप्त अधिकारपूर्ण ढंग से उसे वहीं जाने को कहता है कि नहीं, यह

यह मेरी आज्ञा है।" वह स्वार्थ में अंधा होकर चंद्रगुप्त को सदैव शंकाकुल नजरों से देखता है। ध्रुवस्वामिनी के हृदय में चंद्रगुप्त के लिए सहानुभूति है वह उसे भी अपने स्वेच्छाचारी मार्ग से हटाना चाहता है। ध्रुवस्वामिनी की भर्त्सनाएँ और आर्त पुकार उसके बहरे कानों को नहीं सुनाई पड़ती है। समस्त नीति, सदाचार, धर्म आदि बातों को अलग रखकर वह ध्रुवस्वामिनी से निष्ठुरतापूर्वक कहता है – "नहीं, नहीं जाओ, तुमको जाना पड़ेगा। तुम उपहार की वस्तु हो। आज मैं तुम्हें किसी दूसरे को देना चाहता हूँ। इसमें तुम्हें आपत्ति क्यों है? रामगुप्त की क्रूरता और निष्ठुरता का यह चरम प्रदर्शन है। जब वह पराजित निरीह शकों के साथ देव-तुल्य मिहिरदेव और कुसुम कुमारी और कोमा जैसी लड़की की हत्या करवा देता है।

धूर्त एवं चाटुकार शिखर स्वामी के अतिरिक्त रामगुप्त का अपना कोई नहीं है। उसे किसी पर विश्वास नहीं, उसके दुराचरणों के कारण उसे कोई नहीं चाहता। उसकी क्रूरताओं और कपटी आचरणों से अधीर होकर राज्य के परम विश्वासी अनुचर सामन्त कुमार भी उससे विद्रोह कर उठते हैं। पुरोहित उसके पुंसत्व हीन कदाचारों की कथा सुनकर उसे – "गौरव से नष्ट, आचरण से पतित और कर्मों से राज किल्बिषी घोषित करते हैं। समस्त परिषद न्यायपूर्ण दृष्टि से उसके कुकृत्यों का निरीक्षण कर उसके विषय में एक मत से निर्णय देती है – अनार्य, पतित और क्लीव रामगुप्त गुप्त-साम्राज्य के पवित्र राज सिंहासन पर बैठने का अधिकारी नहीं है।"

रामगुप्त की स्वार्थ भावना प्रबल है। वह कूट-नीति और और दुष्ट प्रतिभा से भरा है। जैसे ही उसे शक-अवरोध की सूचना मिलती है तथा शकराज के प्रस्ताव से अवगत होता है, तत्काल वह एक चाल चल अपने दो विरोधियों को – चंद्रगुप्त और ध्रुवस्वामिनी के अंत की योजना बनाता है और शकराज को संतुष्ट करने की बात सोच लेता है। वह शिखर-स्वामी को समझाता है – "शक दूत संधि के लिए जो प्रमाण चाहता है, उसे अस्वीकार न करना चाहिए। ऐसा करने में संकट के बहाने जितनी विरोधी प्रकृति है उन सबको हम लोग हटा सकेंगे। तुम्हारी राजनीति-ज्ञता इसी में है की भीतर और बाहर के सब शत्रु एक ही चाल में परास्त हों।"

कुनीति और कायरता की नींव पर अवस्थित अधिकार अल्पकालीन होता है। कुटिल नीति भी

पुरुषार्थ और पराक्रम की अपेक्षा रखता है। रामगुप्त में उसका सर्वथा अभाव है। सभी ओर से अपराधों और निन्दनीय घोषित किये जाने के बावजूद वह प्रतिशोध की भावना से भरा है, वह चन्द्रगुप्त की हत्या की योजना बनाता है। यह प्रत्यक्ष रूप से शूरवीरों का लक्षण नहीं, वरन् वामघाति से वह चन्द्रगुप्त पर प्रहार करने की कोशिश करता है। वह अपनी इस कुचेष्टा में एक सामन्त कुमार के द्वारा मार डाला जाता है। इस प्रकार नाटकीय कथावस्तु के साथ उसके जीवन का अन्त एक आदर्श सम्मत विधान प्रतीत होता है। नाटक के प्रतिनायक के रूप में उसका चरित्र समस्त दुर्गुणों से विभूषित होने के बावजूद उत्कर्ष पर पहुंचता है।

U. G. B. A. Part II
Hindi (Hons)
"Ram Gupt ka Charitra"